[illegible]

उपहार

उपसंहार

इस अध्याय में हम अब तक के विवेचन का सार प्रस्तुत करेंगे।

अध्याय पहला :

इस में लेखक का व्यक्तित्व तथा कृतित्व दिया गया है।

जैनेंद्रकुमार का जन्म सन १९०५ में कौडियागंज में हुआ। इनकी मुख्य देन उपन्यास तथा कहानी है। एक साहित्यिक विचारक के रूप में भी जैनेंद्र-कुमार का स्थान महत्त्वपूर्ण है। जैनेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापुर में गुरुकुल में हुई। मैट्रिक की परीक्षा प्रावेट रूप से पास की। यह परीक्षा उन्होंने १९१९ में पंजाब से उत्तीर्ण की। आपकी उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई। १९२१ में उन्होंने पढाई छोड कर कॉंग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग लिया। १९२१ से २३ के बीच माता के साथ व्यापार किया, जिस में उन्हें सफलता भी मिली। इसके बाद उन्होंने लेखन कार्य आरम्भ किया।

जैनेंद्र की सर्वप्रथम औपन्यासिक कृति ` परख ` का प्रकाशन १९२९ मे हुआ। सत्यधन, कटटो, बिहारी और गरिमा नामक पात्र-पात्रियोंके चरित्रपर आधारित यह मनोवैज्ञानिक कथा अप्रत्यक्ष रूप से विधवा विवाह की समस्या से सम्बन्ध रखती है। सन १९३५ में जैनेंद्र के दूसरे उपन्यास ` सुनीता ` का प्रकाशन हुआ। इस उपन्यास के पात्र-पात्रियों के व्यवहार और प्रतिक्रियाएँ निरुद्देश्य एवं अप्रत्याशित लगती है। अप्रत्याशित व्यवहार प्रदर्शन की भावना के कारण ही उपन्यास में क्षीण स्थल आये हैं। ` सुनीता ` को जैनेंद जी की सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक कृति कहा जा सकता है।

जैनेंद्र जी की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि और सशक्त वातावरण चित्रण पाठक पर अमिट प्रभाव डालता है। ` सुनीता ` के कथा-चक्रकी सबसे भारी घटना निर्जन वनमें अर्धरात्रि के समय सुनीता का हरिप्रसन्न के सामने निर्वसन हो जाना है।

परन्तु ` सुनीता ` के चरित्रों की मानसिक अस्थिरता को देखते हुए इस घटना को बहुत अधिक महत्व नहीं देना चाहिए। इस आधार पर जैनेंद्र पर नग्नवादिता के आरोप अनौचित्यपूर्ण है। जैनेंद्र की तीसरी औपन्यासिक कृति ` त्यागपत्र ` है। इसका प्रकाशन सन १९३७ में हुआ। मृणाल की सूक्ष्म चारित्रिक प्रतिक्रियाओं, विवश इच्छाओं, दमित स्वप्नों, तथा निर्द्वेग विकारों की यह मनोवैज्ञानिक कथा अत्यन्त मार्मिक बन सकी है।

सन १९३९ में जैनेंद्रकुमार के चौथे उपन्यास ` कल्याणी ` का प्रकाशन हुआ। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि कथा का प्रस्तुत कर्ता उपन्यास का गौण पात्र है। जैनेंद्र का पाँचवा उपन्यास ` सुखदा ` है। इसका प्रकाशन सन १९५३ ई. मे हुआ। इसका कथानक घटनाओं के वैविध्य बोझसे आक्रान्त है। अनेक अनावश्यक, अप्रासंगिक विवरणों तथा चमत्कारिक तत्वों से कथा अशक्त हो गयी है।

जैनेंद्र की छठवी औपन्यासिक कृति ` विवर्त ` का प्रकाशन सन १९५३ में हुआ। इस उपन्यास के कथानक का केंद्र जितेन का चरित्र है।

जैनेंद्र का सातवाँ उपन्यास ` व्यतित ` हैं, जो सन १९५३ में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास का नायक कवि जयन्त है। जयन्त, अनिता, चन्द्री, पुरी तथा कपिला आदि पात्र कठपुतलियों की भाँति व्यवहार करते हैं और कथानक की गति रूध्द हो जाती है।

जैनेंद्र जी का आठवाँ उपन्यास ` जयवर्धन ` है। इसका प्रकाशन सन १९५६ में हुआ। कथात्मकता एवं विचारात्मकता की दृष्टि से यह उनके पूर्व उपन्यासों से पर्याप्त भिन्नता रखता है। ऐसा भासित होता है कि इस कृति में जो विषय प्रस्तुत किये गये हैं, उनके लिए उपन्यास उपयुक्त माध्यम नहीं है। ` जयवर्धन ` के बाद दस वर्ष के पश्चात लिखा गया उपन्यास है ` मुक्तिबोध `

जिस में जैनेंद्र के राजनीतिक और सामाजिक बोध को उनके जीवन दर्शन को उजागर करता हैं। ` मुक्तिबोध ` का नायक ` सहाय ` एक कॉंग्रेस सदस्य और मंत्री होने के के बावजुद गाँधीवादी विचार धारा से प्रभावित है। अपने दल में पदलिप्सा की होड देखकर और गाँधीवादी सिधान्तों के विरूध्द आचरण देखकर उसका मन पद विमुख बन गया। अत: वह अपने पद का त्यागपत्र देने का निर्णय घोषित करता हैं। इसके बाद ` अनन्तर ` उपन्यास की रचना लेखक ने की है इसे ` जयवर्धन ` उपन्यास में प्रकट विचारधारा की विकसित अथवा प्रौढ कृति कहा जा सकता है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया हैं। उपन्यास का नायक ` प्रसाद ` अपने पुत्र और पुत्रवधु को जो मधुपर्व मनाने के लिए जा रहे हैं, उनको स्टेशन पर विदा करने जाता है। और वहाँ से लौटते हुए अपने जीवन की व्यर्थता को अनुभव करता है। ` अनामस्वामी,`` त्यागपत्र ` के ` प्रमोद ` के त्यागपत्र देने के पश्चात के जीवन का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। प्रथम एक दो परिच्छेदों में चिंतनपरक विश्लेषण प्राप्त होता है और कथात्मकता नगण्य हैं। फिर से बारह परिच्छेद लिखकर कथात्मकता का आशय प्रकट किया है। इस प्रकार प्रथम अध्याय में लेखक का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इन बातों का विवेचन प्रस्तुत किया है।

दूसरा अध्याय :

इस अध्याय में नैतिकता का अर्थ और स्वरूप का सामान्य परिचय दिया है। उसमें नैतिकता क्या है, नैतिकता शब्द और व्याख्या, सामाजिक नैतिकता, वैयक्तिक नैतिकता (उपन्यास रचना और उपन्यासकार का जीवन-दर्शन, उपन्यासकार की आत्माभिव्यक्ति और सच्चाई, उपन्यास-रचना और सामाजिक नैतिकता उपन्यास का नैतिक व्यवस्था पर प्रभाव, इन बातों का विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया है और उसका निष्कर्ष इस प्रकार निकाला है कि उपन्यास और नैतिकता

के परस्पर सम्बन्ध के विवेचन के उपरान्त हम यह कह सकते हैं कि उपन्यास में नैतिकता के समावेश के कारण उपन्यास-रचना पर भी प्रभाव पडता है। उपन्यासकार के जीवन-दर्शन के रूप में, उपन्यासकार की नैतिकता उसकी रचना पर इतनी छायी रहती है कि यही उसकी कृति का मूलस्थर बनकर उसकी रचना के अंग-प्रत्यंग पर अपना प्रभाव डालती है।

इस अध्याय में नैतिकता का सामान्य परिचय देने के साथ उपन्यासकार का उसकी रचना में उसके व्यक्तित्व तथा विचार एवं चिंतन का जो प्रभाव होता है वह स्पष्ट रूप से दिखायी देता है।

अध्याय तीसरा :

इस अध्याय में जैनेंद्र पूर्व उपन्यासों में अभिव्यक्त नैतिकता के स्वरूप पर विचार-विमर्श प्रस्तुत किया है। उस में प्रेमचंद्र पूर्व और प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में अभिव्यक्त नैतिकता का सामान्य परिचय दिया है। प्रेमचंद पूर्व उपन्यास साहित्य के बारे में हम इतना कह सकते हैं कि तत्कालिन उपन्यास-साहित्य लोक-जीवन की व्याख्या के बजाय लोक-शिक्षा अथवा लोकरंजन में ही रमा हुआ था। इसका मानव जीवन से कोई खास लगाव न था।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास-साहित्य मेंसबसे पहले सामाजिक नैतिकता का उद्‌बोधन किया हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों मे जो चित्रण प्रस्तुत किया है वह दलितों का है तथा पीडितों का है और वंचितों का है। समाज के इन पीडितों के प्रति जन-साधारण में उपेक्षा का भाव व्याप्त था। यह समाज में नैतिक चेतना के अभाव का द्योतक था। अत: समाज के इन पीडित अंगों के प्रति चेतना एवं सम्वेदना उत्पन्न करके प्रेमचंद ने समाज की नैतिकता का उद्‌बोधन किया। उन्होंने पीडितों की दुर्दशा को अपने उपन्यासों का विषय बनाकर समाज की नैतिकता को चुनौती दी और उनके प्रति समाज में सहानुभूति एवं नैतिक सम्वेदना

का भाव उत्पन्न किया। प्रेमचंद युगीन अन्य उपन्यासकारों ने भी उपन्यास रचना की, वह प्रमुख रूप से सामाजिक और ऐतिहासिक है।

अध्याय चौथा :

इस अध्याय में लेखक पर जो विभिन्न प्रभाव हमें दिखायी देते हैं। उनका विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया है। वे प्रभाव कुछ इस प्रकार है - जैन दर्शन, गाँधी विचारधारा और जैनेंद्र, जैनेंद्रपर फ्रायड का प्रभाव, सार्त्र का जैनेंद्र पर प्रभाव, जैनेंद्र के प्रेरणा स्त्रोत - रविंद्र, शरत का जैनेंद्र पर प्रभाव, जैनेंद्र पर गेस्टाप्टवादी औपन्यासिक तंत्र का प्रभाव। संक्षेप में इस अध्याय में जैनेंद्र जी पर जो विविध प्रभाव हमें दिखायी देते हैं उनका विवेचन यहाँ किया है। उनमें कुछ दार्शनिक है, कुछ मनोवैज्ञानिक है तो कुछ साहित्यिक। कुछ भारतीय है तो कुछ पाश्चात्य। इन में से किसी का प्रभाव जैनेंद्र जी मानते हैं, तो किसी को नकारते हैं। जैन दर्शन, गाँधी विचारधारा तथा रविंद्र और शरत् का प्रभाव जैनेंद्र जी स्वयं मान्य करते हैं। उनके साहित्य में ये प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से दिखायी देते हैं।

इन प्रभावों को मान्य करते हुए भी जैनेंद्र जी की अपनी विशेषता ही साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान निर्माण करने में समर्थ हुई है।

अध्याय पाँचवा :

इस अध्याय में जैनेंद्र के उपन्यास और नैतिकता इस विषय का विस्तृत विवेचन किया है। जैनेंद्रकुमार ने सर्वप्रथम उपन्यास का लक्ष्य समाज से हटाकर व्यक्ति पर केंद्रित किया परिणाम स्वरूप उनके सभी औपन्यासिक पात्र व्यक्ति प्रधान हैं। वे व्यक्ति के विचार तथा मन में होनेवाले भाव इन बातों का मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण करते दिखायी देते हैं। इन बातों का विस्तार से विश्लेषण हमने पहले किया है। (उसके अतिरिक्त नैतिकता को धक्का देनेवाली

घटनाएँ उनके सभी औपन्यासिक कृतियों में मिलती हैं।) उन घटनाओं का संकलन किया है। उसके बाद घटनाओं का विश्लेषण विवेचन प्रस्तुत किया है। उसका निष्कर्ष दिया है। अन्त में मूल्यांकन इस प्रकार किया है - नैतिक आदर्श की प्रतिष्ठा, त्याग की महिमा, नैतिक कर्तव्य, अहंभाव का दमन, नि:संग जीवन का आदर्श आदि। जैनेंद्र की नारी धर्म-पत्नि के रूप में पति-पुरुष के धर्म में ही अपना अस्तित्व मिटा देनेवाली है। तथा प्रेमिका के रूप में प्रेमी की अपेक्षाओं की पूर्ति का उपकरण मात्र है।

निष्कर्ष :

प्राकथन में जो प्रश्न हमने उठाये थे, उन के उत्तर संक्षेप में निम्न प्रकार हैं।

१) प्रेमचंद पूर्व उपन्यास साहित्य के बारे में हम इतना कह सकते हैं कि तत्कालिन उपन्यास-साहित्य लोक-जीवन की व्याख्या की अपेक्षा लोक-शिक्षा अथवा लोक-रंजन में ही रमा हुआ था। इसका मानव जीवन से कोई खास लगाव न था।

२) प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में जो चित्रण प्रस्तुतत किया है वह दलितों का पीडितों का और वंचितों का है। समाज के इन पीडितों के प्रति जन साधारण में उपेक्षा का भाव व्याप्त था। यह समाज में नैतिक चेतना का अभाव का द्योतक था। प्रेमचंद ने समाज की नैतिकता का उद्बोधन किया। प्रेमचंद में व्यक्तिगत नैतिकता का चित्रण नहीं है।

३) प्रेमचंद युगीन अन्य उपन्यासकारों ने भी उपन्यास रचना की, वह प्रमुख रूप से सामाजिक और ऐतिहासिक है। इस प्रकार इस साहित्य में भी व्यक्तिगत नैतिकता का चित्रण नहीं है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

४) लेखक पर जो विभिन्न प्रभाव हमें दिखायी देते हैं, वे इस प्रकार है। जैन दर्शन, गांधी विचारधारा और जैनेंद्र, जैनेंद्र पर फ्रायड का प्रभाव, सार्त्र का जैनेंद्र पर प्रभाव, जैनेंद्र के प्रेरणा-स्त्रोत-रवीन्द्र, शरत् का जैनेंद्र पर प्रभाव, जैनेंद्र पर गेस्टाल्टवादी औपन्यासिक तंत्र का प्रभाव, आदि के प्रभाव दिखायी हुं देते हैं।

५) जैनेंद्रकुमार ने सर्व प्रथम उपन्यास साहित्य का लक्ष्य समाज से हटाकर व्यक्ति पर केंद्रित किया। परिणाम स्वरूप उनके सभी औपन्यासिक पात्र व्यक्ति प्रधान है।

६) नैतिक आदर्श की प्रतिष्ठा, त्याग की महिमा, नैतिक कर्तव्य, अहंभाव का दमन, नि:संग जीवन का आदर्श, आदि आदर्शों की स्थापना जैनेंद्र जी ने अपने उपन्यासों में की है।